B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Deptt. of Sociology — Date:- 5/08/2020

B.A (Hons) – I — By: Dr. Rajesh Kr.

Paper – II (Social Thinkers) — Sociology

विषय:- मैक्स वेबर का आदर्श प्रारूप का सिद्धांत

वेबर ने सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं के अध्ययन हेतु अपना एक अलग पद्धति की प्रस्तुत की- है जिसे आदर्श प्रारूप के नाम से जाना जाता है। वेबर का कहना है कि इस आदर्श प्रारूप से संसार की किसी- भी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

इनका कहना है कि- आदर्श प्रारूप का निर्माण अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन के समय एवं वस्तु अनुसंधानकर्ता की है। वेबर ने अनुसंधान प्रारूप को अनुसंधानकर्ता की "मानसिक उपज" कहा है। लेकिन कोई भी अनुसंधान- कर्ता आदर्श प्रारूप को अपने मन से नहीं बनाता बल्कि वह उस समस्या से सम्बन्धित विशेषताओं को एक-एक कर चुनता है और एक एक विशिष्ट प्रकार (Type) का निर्माण करता है और इस आदर्श प्रारूप (विशिष्टप्रकार) द्वारा वह उस समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करता है।

वेबर कहते हैं कि इस प्रकार का बनाया गया आदर्श प्रारूप संपूर्ण वास्तविकता नहीं है एवं यह वास्तविकता के पूर्ण प्रतिनिधित्व भी नहीं है बल्कि यह वास्तविकता को प्रतिनिधित्व करने का एक प्रयास मात्र है। यह उपकल्पना भी नहीं है लेकिन यह उपकल्पना के निर्माण सहायक के अध्ययन जरूर है।

वेबर ने सामाजिक समस्याओं एवं घटनाओं के हेतु आदर्श प्रारूप को प्रस्तुत किया। इसकी समीक्षा करते हुए "डॉन मार्टिंडेल" ने कहा कि- वेबर का आदर्श प्रारूप आनुभविक अध्ययनों की एक स्थापना है।

वेबर ने इस आदर्श प्रारूप की सिर्फ चर्चा ही नहीं की बल्कि अपने कई अध्ययनों में इस अध्ययन पद्धति का प्रयोग भी किया है। जैसे:- सामाजिक सामाजिक क्रिया, सत्ता एवं नौकरशाही में।